

भागवत जी, ज्यादातर भारत विरोधी तो हिंदू ही हैं!

अनिल जैन

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ (आरएसएस) और भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) के नेताओं का एक बहु प्रचलित डॉयलॉग है—आतंकवाद का कोई धर्म नहीं होता और कोई हिंदू कभी आतंकवादी नहीं हो सकता। पिछले आम चुनाव के दौरान यह डॉयलॉग प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने भी दोहराया था, फिल्म अभिनेता कमल हासन ने तमिलनाडु की एक चुनावी सभा में कहा था कि देश का पहला आतंकवादी नाथूराम गोडसे हिंदू था, जिसने महात्मा गांधी की हत्या की थी। अभिनय की दुनिया से राजनीति में आए कमल हासन के इस बयान पर आरएसएस और भाजपा सहित तमाम हिंदुत्ववादी संगठनों ने तीखी प्रतिक्रिया जताई थी।

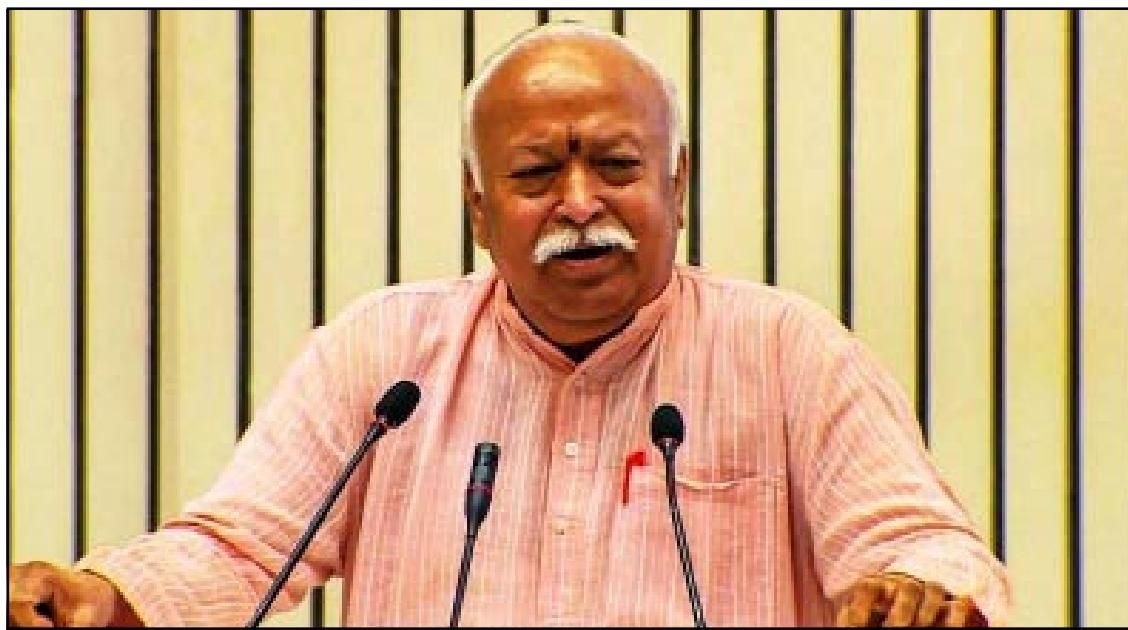
उसी सिलसिले में प्रधानमंत्री मोदी ने भी कुछ टीवी चैनलों को दिए इंटरव्यू में कहा था कि आतंकवाद का कोई धर्म नहीं है। लेकिन इसी के साथ अगली ही सांस में वे यह कहना भी नहीं भूले थे कि हिंदू कभी आतंकवादी नहीं हो सकता और जो आतंकवादी होता है, वह कभी हिंदू नहीं हो सकता। अब इसी तर्ज पर आरएसएस के मुखिया मोहन राव भागवत ने कहा है कि अगर कोई हिंदू है तो वह देश भक्त ही होगा, क्योंकि देश भक्ति उसके बुनियादी चरित्र और संस्कार का अभिन्न हिस्सा है। यह बात उन्होंने महात्मा गांधी को हिंदू राष्ट्रवादी बताने वाली एक तिटाब 'मेकिंग ऑफ ए हिंदू पैट्रियट-बैक ग्राउंड ऑफ गांधीजी हिंदू स्वराज' का विमोचन करते हुए कही।

किताब के नाम और मोहन भागवत के हाथों उसके विमोचन किए जाने से ही स्पष्ट है कि यह महात्मा गांधी को अपने हिसाब से परिभाषित करने की शरारतपूर्ण कोशिश है। बहहाल, सवाल है कि अगर हिंदू भारत विरोधी नहीं हो सकता है तो फिर कौन भारत विरोधी हो सकता है? प्रधानमंत्री मोदी समेत भाजपा और आरएसएस के तमाम नेता और सोशल मीडिया पर उनके अपह-कुपह समर्थकों की फोज सरकार का विरोध करने वाले जिन लोगों को टुकड़े-टुकड़े गैंग का बताते हैं, पाकिस्तान और चीन का एजेंट बताते हैं, देश द्वारी और गदार बताते हैं, उन्हें पाकिस्तान चले जाने की सलाह देते हैं, वे कौन लोग हैं?

सवाल यह भी है मोहन भागवत खुद कई मौकों पर कह चुके हैं और कहते रहते हैं कि भारत में रहने वाला हर व्यक्ति हिंदू है। उनका यह भी कहना है कि कुछ लोगों की पूजा पढ़द्वित अलग हो सकती है, लेकिन वे अगर भारत में जन्मे हैं और भारत में ही रहते हैं तो वे हिंदू हैं। इस बात को भागवत के ताजा बयान के साथ देखा जाए तो भारत के सभी 135 करोड़ लोग हिंदू हैं और इसलिए वे भारत विरोधी नहीं हो सकते। ऐसे में भाजपा और आरएसएस के तमाम छोटे-बड़े नेता 'हम और वे' या 'देश भक्त और देश विरोधी' का नैरेटिव बना रहे हैं और प्रचार कर रहे हैं, उसका क्या मतलब है? क्या यह माना जाए कि संघ प्रमुख के इस बयान के बाद देश भक्त और देश द्वारी वाला नैरेटिव बंद हो जाएगा?

दरअसल मुश्किल यह है कि अगर यह नैरेटिव बंद हो गया तो भाजपा चुनाव किस मुद्दे पर लड़ेगी और संघ अपनी संस्कार शाला में स्वयंसेवकों को क्या सिखाएगा? इसलिए यह माना जाना चाहिए कि भागवत का यह बयान उनके सांप्रदायिक धृत्वाकरण के एजेंडे के सिलसिले को ही आगे बढ़ाने वाला है। इसके सिवाय इसका कोई और मतलब नहीं है। उनके इस कथन से साफ है कि वे सिर्फ देश विरोधी गतिविधियों में लिस अपने संगठन के लोगों को क्लीन चिट ही नहीं दे रहे हैं, बल्कि परोक्ष रूप से हिंदुओं के अलावा देश के अन्य सभी गैर हिंदू समुदायों की देश भक्ति पर सवाल उठा कर उन्हें अपमानित और लाञ्छित कर रहे हैं। उनके इस कथन का स्पष्ट निहितार्थ है कि कोई हिंदू तो भारत विरोधी नहीं हो सकता, लेकिन कोई हिंदू जरूर भारत विरोधी हो सकता है।

जब मोहन भागवत यह कहते हैं कि कोई हिंदू आतंकवादी नहीं हो सकता तो यह सवाल पूछना लाजिमी हो जाता है कि जब कोई हिंदू किसी स्त्री के साथ बलाकर कर सकता है, लोगों को जिंदा जला सकता है, उनके घरों को आग के हवाले कर सकता है, डाका डाल सकता है, लूटपाट कर सकता है, देश के वित्तीय संस्थानों के साथ धोखाधड़ी कर देश से भाग



सकता है और इसके अलावा भी ऐसे तमाम तरह के संगीन आपाराधिक कृत्यों में लिस हो सकता है, जो समाज विरोधी माने जाते हैं, तो फिर वह देश विरोधी क्यों नहीं हो सकता?

फिर सवाल यह भी है कि अखिर मोहन भागवत और उनका संगठन किन कामों को देश विरोधी मानता है? दरअसल धरती के किसी टुकड़े का नाम ही देश नहीं होता है। देश बनता है उस भू भाग पर रहने वाले लोगों से, उनकी उत्तर जीवनशैली, संस्कारों और परंपराओं से। इसलिए देश विरोधी काम सिर्फ किसी दुश्मन देश से मिल कर अपने देश के सामरिक हितों को नुकसान पहुंचाना ही नहीं होता, बल्कि देश को अर्थिक और सामाजिक तौर पर नुकसान पहुंचाना, देश के संसाधनों का आपाराधिक दुरुपयोग करना, किसी के उपासना स्थल का नष्ट कर देना, किसी नाजायज मकसद के लिए जिंदा जलाने वालों और सिख महिलाओं के साथ बलाकर करने वालों में ज्यादातर आरोपी हिंदू ही तो थे। वह पूरा घटनाक्रम क्या देश विरोधी नहीं था?

सवाल यह भी पूछा जा सकता है कि कोई दो दशक पूर्व ओडिशा में ग्राहम स्टेंस नामक निर्देष बूढ़े पादरी और उसके मासूम बच्चों को जिंदा जलाने का कृत्य किस तरह की देश भक्ति या मानवता से प्रेरित थी? उस कृत्य को अंजाम देने वाला बजरंग दल का पदाधिकारी दारा सिंह क्या भारत से बाहर किसी दूसरे देश का गैर हिंदू नागरिक था? ओडिशा में ही करीब एक दशक पहले विश्व हिंदू परिषद के एक नेता लक्ष्मणानंद के नक्सलियों के हाथों मारे जाने की घटना का ठीकरा इसाई मिशनरियों के माथे फोड़कर लगभग एक माह तक विश्व हिंदू परिषद के लोगों ने कंधमाल में हिंसा का जो तांडव मचाया था, वह क्या था? वह रहने वाले सभी ईसाइयों के घरों और चर्चों को आग के हवाले कर डेढ़ सौ से भी ज्यादा लोगों को मौत के घाट उतार दिए जाने का समूचा घटनाक्रम किस तरह के राष्ट्रवाद या देश प्रेम के दायरे में आता है?

इसी सिलसिले में गुजरात को लेकर भी सवाल बनता है कि इसी सदी के शुरुआती दौर में वहाँ 'क्रिया की प्रतिक्रिया' के नाम पर मुसलमानों का संगठित कल्पनाम व्यापक क्या आतंकवादी और देश-विरोधी कार्रवाई नहीं थी? उसी कल्पनाम के दौरान मुस्लिम समुदाय की कई गर्भवती स्त्रियों के गर्भ पर

के लिए दशकों से हिंसक गतिविधियों में संलग्न लड़ाकों को भी क्या भागवत हिंदू नहीं मानेंगे?

सीमा पार के आतंकवाद के साथ ही हमारा देश आज जिस एक और बड़ी चुनौती से जूझ रहा है, वह है माओवादी आतंकवाद। देश के विभिन्न इलाकों में सक्रिय विभिन्न माओवादी संगठनों में अपवाद स्वरूप ही कोई एकाध मुस्लिम युवक होगा, अन्यथा सारे के सारे लड़ाके संघ की परिभाषा के तहत हिंदू ही हैं। इसके अलावा मालेगांव, अजमेर और समझौता एक्सप्रेस में बम धमाके करने के आरोपी असीमानंद, प्रज्ञा ठाकुर, कर्नल पुरोहित आदि तो संघ द्वारा प्रमाणित हिंदू ही हैं।

इनमें से प्रज्ञा ठाकुर तो अब भाजपा की ओर से लोकसभा में भी पहुंच गई हैं। यही नहीं, 2019 में लोकसभा चुनाव के नतीजे आने के बाद उत्तर प्रदेश, बिहार, मध्य प्रदेश राजस्थान, हरियाणा आदि राज्यों में जिस तरह सड़कों पर, बसों और ट्रेनों में लोगों का नाम पूछ-पूछ कर और उनके संप्रदाय और जाति की शिनाख करके उन्हें शारीरिक रूप से प्रताड़ति किए जाने का जो सिलसिला कई महीनों तक चला था, उसे मोहन भागवत किस श्रेणी में रखेंगे? गौरतलब है कि इस तरह की घटनाओं में कई लोग मारे भी गए थे।

यहां जेल में बंद आसाराम और गुरमीत राम रहीम जैसे लोगों का जिक्र करना भी जरूरी है, जो कथित धार्मिक गतिविधियों की आड़ में वर्षों तक बलाकर और अन्य जघन्य कृत्यों में लिस रहे हैं। यही नहीं, इनके जेल जाने से पहले तक खुद मोहन भागवत नेता और गुजरात के तक्कालीन मुख्यमंत्री नरेंद्र मोदी और गृह मंत्री अमित शाह का करीबी सहयोगी हुआ करता था और जिसे अदालत ने आजीवन कारावास की सजा सुना रखी है। क्या यह अफसोस और ताज्जुब की बात नहीं है कि इस तरह की सारी शर्मनाक घटनाओं की आज तक संघ भाजपा और विश्व हिंदू परिषद के किसी शीर्ष नेता ने औपचारिक रूप से निर्दा नहीं की है।

अपने संगठन को देश भक्ति और भारतीय संस्कृति का एकमात्र इंडियन भागवत को यहां यह याद दिलाना भी अप्रासंगिक नहीं होगा कि तमिलनाडु में सत्यमंगलम के जंगलों में लंबे समय तक आतंक का पर्याय रहा चंदन तस्कर वीरपन भी मुस्लिम या ईसाई नहीं बल्कि हिंदू ही था। कोई चार दशक पूर्व तक चंबल घाटी में आतंक फैला कर हजारों लोगों को लटने और मौत के घाट उतारने वाले दस्युओं में भी सब के सब हिंदू ही थे।

यही नहीं, हमारे पड़ोसी देश श्रीलंका में ढाई दशक से भी ज्यादा समय तक लगातार खून-खाराबा करते रहे भेहुल और नीरव मोदी के बारे में मोहन भागवत क्या कहेंगे, जो हाल के वर्षों में भारतीय बैंकों के अरबों रुपये हड्डप कर विदेशों में जा बसे हैं। क्या वे हिंदू नहीं हैं या उनका कृत्य देश-विरोधी अपराध के दायरे में नहीं आते हैं?

उपरोक्त सारे उदाहरणों का आशय समूचे हिंदू समाज को लाभित या अपमानित करना कर्तृत नहीं है। मक्कद सिर्फ यह बताना है कि चाहे वह गोडसे हो या दारा सिंह, चाहे सिख विरोधी हिंसा के अपराधी हों या गुजरात के कातिल, चाह